DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

समास

Part -6

LIVE 22-07-2024 05:00 PM

समास प्रकरणम्

समास परिचय

समास शब्द की व्युत्पति:

सम् √अस् + घञ् = समास: शब्द बनता है।

'समास' शब्द का अर्थ है:

- 'समसनम्' इति समास: अर्थात् संक्षेपीकरण को ही समास कहते हैं।

- परस्परम् 'अन्वितानां' पदानां समसनम् एकीभवनं समासः अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का विभक्ति रहित एक पद बनना ही समास है।
- अनेकस्य पदस्य एकपदीभवनं समासः इत्यर्थः अर्थात् अनेक पदों का बनना समास है।

विभक्तिलुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।

पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते ।।

अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता है; परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता है और अनेक पद मिलकर एक पद बन जाता है, उसे समास कहते हैं।

जैसे-

दशरथस्य पुत्रः = दशरथपुत्रः

पीतम् अम्बर यस्य सः = पीताम्बरम्

इस प्रकार समास का अर्थ हो जाता है कि संक्षेपण। अर्थात् दो या दो से अधिक पदों में प्रयुक्त विभक्तियों, समुच्चय बोधक 'च' आदि को हटाकर एक पद बनाना।

समास में प्रयुक्त शब्दावली

पूर्व पदः समास में प्रयुक्त दो पदों में से पहला पद (शब्द) पूर्व पद होता है। जैसे- 'राज्ञः पुरुषः' यहाँ पूर्व पद 'राज्ञः' है।

उत्तर पदः समास में प्रयुक्त दो पदों में से दूसरा पद (शब्द) उत्तर पद होता है। जैसे– 'राज्ञः पुरुषः' यहाँ उत्तर पद 'पुरुषः' है।

विग्रहः "वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः' समास के अर्थ को बतलाने वाला वाक्य 'विग्रह' कहा जाता है। यह व्यस्त पद भी कहलाता है। जैसे- 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए "पीतम् अम्बरं यस्य सः" वाक्य ही विग्रह कहा जाता है। समास विग्रह **दो प्रकार** का होता है

(i) लौकिक विग्रह

(ii) अलौकिक विग्रह।

(i) लौकिक विग्रह: लोक व्यवहार के समझने लायक विग्रह वाक्य को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं। जैसे- 'दशरथपुत्रः' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह: दशरथस्य पुत्रः होगा।

(ii) अलौकिक विग्रह: जो व्याकरणशास्त्र की प्रक्रिया दर्शाने हेतु प्रत्यादि का उल्लेख करके जो विग्रह होता है, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं। जैसे 'दशरथपुत्रः' सामासिक पद का अलौकिक विग्रह 'दशरथ ङस् पुत्र सु' होगा।

समस्त पद या सामासिक पदः समास से युक्त पद को 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं। जैसे अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिकपद कहें जायेंगे।

समास के भेद

"लघुसिद्धान्तकौमदी" के लेखक वरदराज ने समास के पाँच प्रकार बताये हैं: 'समासः पञ्चधा'

1. केवल समास
2. अव्ययीभाव समास
3. तत्पुरुष समासः कर्मधारयः द्विगु
4. द्वन्द्व समास
5. बहुव्रीहि समास

अव्ययीभाव समास

'पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः' अर्थात् प्रायसः जिस समास में. पूर्व पद का अर्थ प्रधान या मुख्य हो, वहाँ अव्ययीभाव समास होता हैं। इस समास में प्रायः पूर्व पद अव्यय ही होता है।)

'अनव्ययम् अव्ययः सम्पद्यते इति अव्ययीभावः' अर्थात् जो समस्त पद बनने से पहले तो अव्यय नहीं था, किन्तु समास होते ही अव्यय बन जाता है, वही अव्ययीभाव समास होता है।

अव्ययीभाव समास होने पर सामासिक पद अव्यय बन जाता है तथा समस्त पद नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयोग किया जाता है।

जैसे- बलम् अनतिक्रम्य यथाबलम्

यहाँ बलम् शब्द अव्यय नहीं है किन्तु यथा इस अव्यय के साथ समास होकर 'यथाबलम्' यह पूरा पद अव्यय हो गया और नपुंसकलिङ्ग एकवचन में प्रयुक्त हो जाता है।

विशेषः

- इस समास में पहला पद अव्यय होता है, अव्यय में उपसर्ग, निपात शामिल है। जैसे अधिहरि यहाँ 'अधि' उपसर्ग है। पहला पद अव्यय है अतः सम्पूर्ण पद में अव्ययीभाव समास है।
- अकारान्त (अ स्वर अन्त में) और आकारान्त (आ स्वर अन्त में) वाले शब्द होने पर 'सु' के स्थान पर 'अम्' हो जाता है अर्थात् अन्त में अम् जोड़ा जाता है। जैसे कृष्णस्य समीपम् उपकृष्णम्।

- इकारान्त, उकारान्त तथा हलन्त (व्यञ्जनान्त) शब्दों से प्रायः विभक्ति का लोप होता है। जैसे हरि शब्दस्य प्रकाशः इतिहरि।
- यदि समस्त पद बनाते समय अन्त में ई, ऊ, ऋ (दीर्घ स्वर) हो तो उन्हें ह्रस्व स्वर (इ, ऊ, ऋ) करके समस्त पद बनाया जाता है। जैसे उपनदि नद्याः समीपम्।

अव्ययीभाव समास करने के नियम

सूत्र:- 'अव्ययं विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्वृद्धि-अर्थाभाव-अत्यय-असम्प्रति-शब्दप्रादुर्भाव-पश्चाद्-यथा-अनुपूर्व्य-यौगपद्य-सादृश्य-सम्पत्ति-साकल्य-अन्तवचनेषु' (2/1/6)

वृत्तिः विभक्त्यर्थादिषु वर्तमानमव्ययं सुबन्तेन सह नित्यं समस्यते सोऽव्ययीभावः।

सूत्रार्थः - विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि, अर्थाभाव, अत्यन्त (नष्ट होना), असम्प्रति (अब युक्त न होना), शब्दप्रादुर्भाव (शब्द का प्रकट होना), पश्चात्, आनुपूर्व्य (क्रमशः), यौगपद्य (एक साथ होना), सादृश्य (समान), सम्पत्ति, साकल्य (सम्पूर्णता) और अन्त (समाप्ति) इन 16 अथर्थों में नित्य अव्ययीभाव समास होता है।

अव्यय का अर्थ	अव्यय पद	समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
विभक्ति (इति)	अधि	हरौ इति	अधिहरि (हरि में)
		आत्मनि इति	अध्यात्मम् (आत्मा में)
		गोपि इति	अधिगोपम् (गोप में)

समीप	उप	गङ्गायाः समीपम्	उपगङ्गम् (गङ्गा नदी के समीप)
		नगरस्य समीपम्	उपनगरम् (नगर के समीप)
		कृष्णस्यसमीपम्	उपकृष्णम् (कृष्ण के समीप)
		कूलस्य समीपम्	उपकूलम् (किनारे के समीप)
		तटस्य समीपम्	उपतटम् (तट के समीप)
समृद्धि	सु	मद्राणां समृद्धिः	सुमद्रम् (मद्र देशवासियों की समृद्धि

		भिक्षाणां समृद्धिः	सुभिक्षम् (भिक्षाटन की समृद्धि
व्यद्धि (वृद्धि का अभाव)	दुर्	यवनानां व्यृद्धिः	दुर्यवनम् (यवनों की दुर्गति)
		भिक्षाणां व्यद्धिः	दुर्भिक्षम् (भिक्षा का न मिलना)
		शकानां व्यृद्धिः	दुःशकम् (शकों की दुर्गति)
		राक्षसाणां व्यद्धिः	दुर्राक्षसम् (राक्षसों की अवनति)
अर्थाभाव	निर्	मक्षिकाणाम् अभावः	निर्मक्षिकम् (मक्खियों का अभाव)
		प्राणानाम् अभावः	निष्प्राणम् (प्राणों का अभाव)

		विघ्नानाम् अभाव:	निर्विघ्नम् (विघ्नों का अभाव)
		जनानाम् अभाव:	निर्जनम् (मनुष्यों का अभाव)
		दोषाणाम् अभाव:	निर्दोषम् (दोषों का अभाव)
अत्यय (नष्ट होना)	अति	हिमस्य अत्यय:	अतिहिमम् (हिम का नाश)
		रोगस्य अत्यय:	अतिरोगम् (रोग का नाश
		शीतस्य अत्यय:	अतिशीतम् (शीतलता का नाश)

असम्प्रति (अव युक्त न होना)	अति	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	अतिनिद्रम् (इस समय नींद उचित नहीं)
		स्वप्न: सम्प्रति न युज्यते	अतिस्वप्नम् (इस समय स्वप्न उचित नहीं)
		कम्बलं सम्प्रति न युज्यते	अतिकम्बलम् (इस समय कम्बल उचित नहीं)
शब्दप्रादुर्भाव (शब्द का प्रकाश)	इति	हरिशब्दस्य प्रकाश:	इतिहरि ('हरि' शब्द का प्रकट होना)

		विष्णुशब्दस्य प्रकाश:	इतिविष्णु ('विष्णु' शब्द का प्रकट होना)
		पाणिनिशब्दस्य प्रकाश:	इतिपाणिनि ('शब्द' का प्रकट होना)
		ज्ञानशब्दस्य प्रकाश:	इतिज्ञानम् ('ज्ञान' शब्द का प्रकट होना)
पश्चात्	अनु	विष्णो: पश्चात्	अनुविष्णु (विष्णु के पीछे
		रामस्य पश्चात्	अनुरामम् (राम के पीछे)
		रथस्य पश्चात्	अनुरथम् (रथ के पीछे)

		शिष्यस्य पश्चात्	अनुशिष्यम् (शिष्य के पीछे
		गोपालस्य पश्चात्	अनुगोपालम् (गोपाल के पीछे)
यथा/ योग्यता	अनु	रूपस्य योग्यंम्	अनुरूपम् (रूप के योग्य)
		गुणस्य योग्यम्	अनुगुणम् (गुण के योग्य)
वीप्सा (दोहरान/बारम्बारता	प्रति	अक्षम् अक्षम् प्रति	प्रत्यक्षम् (प्रत्यक्ष)
		एकम् एकं एक प्रति	प्रत्येकम् (प्रत्येक)
		गृहं गृहं प्रति	प्रतिगृहम् (घर:घर)
		दिनं दिनं प्रति	प्रतिदिनम् (प्रतिदिन)

		अर्थम् अर्थ प्रति	प्रत्यर्थम् (प्रत्येक अर्थ)
पदार्थानतिवृत्ति (पदार्थ की सीमा में रहना)	यथा	शक्तिम् अनतिक्रम्य	यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार)
		बलम् अनतिक्रम्य	ग्रथाबलम् (बल के अनुसार)
		समयम् अनतिक्रम्य	यथासमयम् (समय के अनुसार)
		बुद्धिम् अनतिक्रम्य	यथाबुद्धि (बुद्धि के अनुसार)
सादृश्य (समानता)	स (सह)	हरेः सादृश्यम्	सहरि (हरि की समानता)
		रूपस्य सादृश्यम्	सरूपम् (रूप की समानता)

आनुपूर्व्य (क्रमशः)	अनु	ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्यण	अनुज्येष्ठम् (ज्येष्ठ के क्रम से)
		वर्णस्य आनुपूव्र्येण	अनुवर्णम् (वर्ण के क्रमानुसार)
यौगपद्य (एक साथ होना)	स (सह)	चक्रेण युगपत्	सचक्रम् (चक्र के साथ)
		हर्षेण युगपत्	सहर्षम् (हर्ष के साथ)
सादृश्य (समान)	स (सह)	सदृशः सख्या	ससखि (मित्र के जैसा)
		सदृशः वर्णेन	सवर्णम् (वर्ण के समान)

सम्पत्ति	स (सह)	क्षत्राणां सम्पत्तिः	सक्षत्रम् (राजाओं की सम्पत्ति)
साकल्य (सम्पूर्णता)	स (सह)	तृणम् अपि अपरित्यज्य	सतृणम् (तिनके को भी छोड़े बिना।)
अन्त (समाप्ति तक)	स (सह)	अग्निग्रन्थपर्यन्तम्	साग्नि (अग्नि ग्रन्थ की समाप्ति तक पढ़ता है)
		बालकाण्डपर्यन्तम्	सबालकाण्डम् (बालकाण्ड तक)

सूत्रः नदीभ्यश्च (2/1/20)

वृत्तिः नदीभिः सह संख्या समस्यते।

सूत्रार्थः (नदीवाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता हैं। संख्या का पूर्व प्रयोग होता है तथा यह समास नित्य होता है। हैं।)

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
पञ्चानां गङ्गानां समाहारः	पञ्चगङ्गम् (पाँच गङ्गाओं का समूह)
द्वयोः यमुनयोः समाहारः	द्वियमुनम् (दो यमुनाओं का समूह)
सप्तानां नदानां समाहारः	सप्तनदम् (सात नदों का समूह)
सप्तानां गोदावरीणां समाहारः	सप्तगोदावरम् (सात गोदावरियों का समूह)

तत्पुरुष
व्यधिकरण तत्पुरुष (6)
विभक्ति तत्पुरुष
नञ् तत्पुरुष समास
प्रादि तत्पुरुष समास
उपपद तत्पुरुष समास
कुगति तत्पुरुष
अलुक तत्पुरुष समास
द्वितीया तत्पुरुष
तृतीया तत्पुरुष
चतुर्थी तत्पुरुष
पञ्चमी तत्पुरुष
षष्ठी तत्पुरुष
सप्तमी तत्पुरुष
समानाधिकरण तत्पुरुष
कर्मधारय
द्विगु

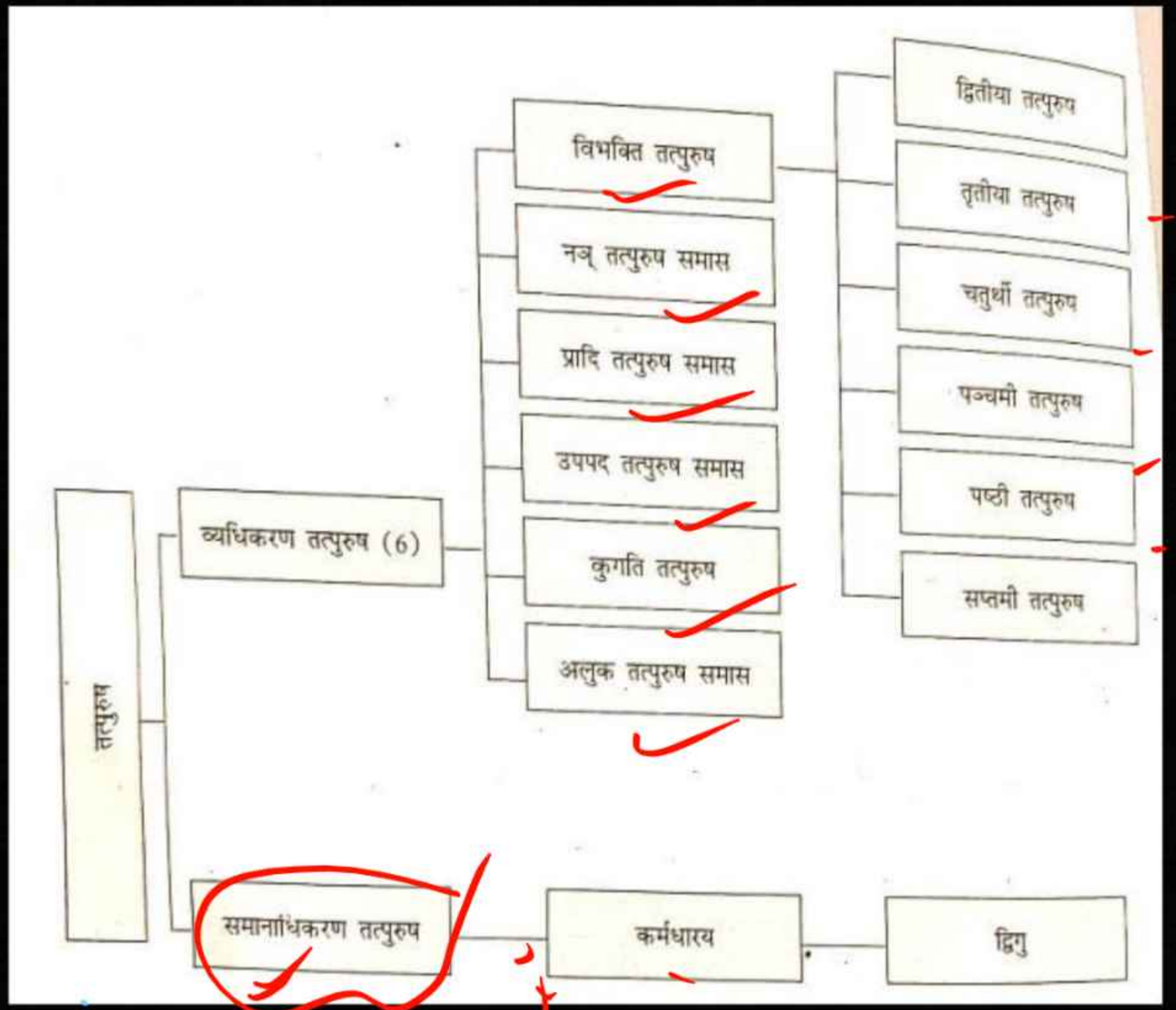

व्यधिकरण तत्पुरुष

[वि + अधिकरण (वि विषम और अधिकरण विभक्ति)] तत्पुरुष समास में जहाँ समास विग्रह में पूर्वपद तथा उत्तर पद दोनों में अलग-अलग विभक्तियाँ हो, तो वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है। पूर्व पद में जो विभक्तियाँ लगी होती हैं, उनके आधार पर ही इस तत्पुरुष के प्रमुख भेद किए जाते हैं:

द्वितीया तत्पुरुष समासः

सूत्रः "द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः"

वृत्तिः द्वितीयान्तं श्रितादिप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह वा समस्यते स तत्पुरुषः

सूत्रार्थः द्वितीय विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ प्रथमा विभक्ति वाले श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त एवं आपन्न शब्द प्राप्त होने पर द्वितीया तत्पुरुष समास होता है।

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
कृष्णं श्रित:	कृष्णाश्रित: (कृष्ण का आश्रय लिया हुआ)
शरणम् आगत:	शरणागत: (शरण में आया हुआ)
लोकम् अतीत:	लोकातीत: (लोक से परे)
भयम् आपन्न:	भयापन्न: (भय को प्राप्त)
रामम् आश्रित:	रामाश्रित: (राम के आश्रित)
सुखं प्राप्त:	सुखप्राप्त: (सुख को प्राप्त हुआ)
अश्वम् आरूढ:	अश्वारूढ: (घोड़े पर आरूढ)
स्वर्ग गत:	स्वर्गगत: (स्वर्ग को पार किया हुआ)

दुःखम् अतीतः	दुःखातीतः (दुःख को पार किया हुआ)
कूपं पतितः	कूपपतितः (कुएँ में गिरा हुआ)
ग्रामं गतः	ग्रामगतः (गाँव को गया हुआ)
जीवनं प्राप्तः	जीवनप्राप्तः (जीवन को प्राप्त किया हुआ)
सुखम् आपन्नः	सुखापन्नः (सुख को पाया हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समासः

सूत्रः "तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन" (2/1/30)

वृत्तिः तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृतगुणवचनेनार्थेन च सह वा प्राग्वत्।

सूत्रार्थः वह तत्पुरुष समास जहाँ पूर्व पद में तृतीया विभक्ति हो तथा ऐसे तृतीयान्त सुबन्त पद तत्कृत (उसके द्वारा किए गए) गुणवाचक-शब्द के साथ तथा 'अर्थ' शब्द के साथ तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
शंकुलया खण्डः	- शंकुलाखण्डः (सरौते से किया गया टुकड़ा)
धान्येन अर्थः	- धान्यार्थः (अन्न से प्रयोजन)
दानेन अर्थः	- दानार्थः (दान से प्रायोजन)

सूत्रः "पूर्वसदृशसमोनार्थकलहनिपुणमिश्रश्लक्ष्णैः" (2/1/31)

वृत्तिः पूर्व सदृश सम ऊनार्थ कलह निपुण मिश्र श्लक्ष्ण इत्येतैः सह तृतीयान्तं समस्यते, तत्पुरुषश्च समासो भवति ।

सूत्रार्थः तृतीया विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ प्रथमा विभक्ति वाले पूर्व, सदृश, सम, ऊन या इसके समानार्थी शब्द, कलह निपुण, मिश्र, श्लक्ष्ण आदि शब्द हो तो वहां तृतीया तत्पुरुष समास माना जाता है।

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
मासेन पूर्वः	मासपूर्वः (महीने से पहले)
पित्रा सदृशः	पितृसदृशः (पिता के समान)
भ्रात्रा समः	भ्रातृसमः (भाई के बराबर)
मासेन ऊनम्	मासोणम् (मास भर कम)
ज्ञानेन हीनः	ज्ञानहीनः (ज्ञान से हीन)
वाचा कलहः	वाक्कलहः (बातचीत से झगड़ा)
आचारेण निपुणः	आचारनिपुणः (आचार से निपुण)
गुडेन मिश्रः	गुडमिश्रः (गुड से मिला हुआ)

आचारेण श्लक्षण:	आचारश्लक्ष्ण: (आचरण मे सहज)
मात्रा सदृश:	मातृसदृश: (माता के समान)
नेत्राभ्याम् हीन:	नेत्रहीन: (नेत्रों से हीन)
घृतेन पक्वम्	घृतपक्वम् (घी से पकाया हुआ)
पादेन खञ्ज:	पादखञ्ज: (पैर से लँगड़ा)

पञ्चमी तत्पुरुष समासः

सूत्रः "पञ्चमी भयेन" (2/1/37)

वृत्तिः पञ्चम्यन्तं सुबन्तं भयशब्देन सुबन्तेन सह समस्यते विभाषा, तत्पुरुषश्च समासो भवति।

सूत्रार्थः पञ्चमी विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ प्रथमा विभक्ति वाले भय (भय, भीति, भीत, भी) पदों के साथ चतुर्थी तत्पुरुष समास माना जाता है।

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
चौरात् भयम्	चोरभयम् (चोर से डरा हुआ)
व्याघ्रात् भयम्	व्याघ्रभयम् (बाघ से डरा हुआ)
सिंहात् भीतः	सिंहभीतः (सिंह से भय)
वृकात् भीतिः	वृकभीतिः (भेड़िए से भय)
सर्पात् भीः	सर्पभीः (सर्प से डर)
राज्ञः भयम्	राजभयम् (राजा से डर)

सूत्रः "अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः" (2/1/38)

वृत्तिः अपेत-अपोढ-मुक्त-पतित-अपत्रस्त इत्येतैः सह पञ्चम्यन्तं समस्यते, तत्पुरुषश्च समासो भवति.

सूत्रार्थः पञ्चम्यन्त शब्दों का अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित आदि पदों के साथ पञ्चमी तत्पुरुष समास होता है।

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
सुखात् अपेत:	सुखापेत: (सुख से रहित)
कल्पनाया: अपोढ़:	कल्पनापोढ: (कल्पना से शून्य)
बन्धनात् मुक्त:	बन्धनमुक्त: (बंधन से मुक्त)
मार्गात् भ्रष्ट:	मार्गभ्रष्ट: (मार्ग से भ्रष्ट हुआ)
अश्वात् पतित:	अश्वपतित: (घोड़े से गिरा हुआ)
वृक्षात् पतित:	वृक्षपतित: (वृक्ष से गिरा हुआ)
स्वर्गात् पतित:	स्वर्गपतित: (स्वर्ग से पतित)

षष्ठी तत्पुरुष समास

सूत्र: "षष्ठी" (2/2/8)

वृत्तिः षष्ठ्यन्तं सुबन्तं समर्थेन सुबन्तेन सह समस्यते, तत्पुरुषश्च समासो भवति।

सूत्रार्थः षष्ठी विभक्ति वाले पूर्वपद के साथ-साथ प्रथमा विभक्ति वाले उत्तरपद का आपस में कोई संबंध स्थापित हो रहा हो तो वहाँ षष्ठी विभक्ति तत्पुरुष समास माना जाता है।

राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः

दशरथस्य पुत्रः = दशरथपुत्रः

सीतायाः पतिः = सीतापतिः